

MAA OMWATI DEGREE COLLEGE, HASSANPUR

SUBJECT- SKETCHING (MDC)

CLASS – BA,B.SC, B.COM, (1 SEMESTER)

SESSION- 2026-27

UNIT-1

दृश्य कला (Visual Arts) क्या है?

दृश्य कला (Visual Arts) कला की वह शाखा है जिसमें कलाकार रेखा, रंग, आकार, रूप, बनावट और स्थान आदि का प्रयोग करके अपने विचारों, भावनाओं और अनुभवों को ऐसी कलाकृतियों के रूप में व्यक्त करता है जिन्हें आँखों से देखा जा सकता है। चित्रकला, मूर्तिकला, रेखाचित्र, फोटोग्राफी, प्रिंटमेकिंग और कई प्रकार की हस्तकलाएँ दृश्य कला के उदाहरण हैं।

दृश्य कला की परिभाषा

सरल शब्दों में, जो कला मुख्य रूप से देखने के माध्यम से अनुभव की जाती है, उसे दृश्य कला कहते हैं। इसमें कलाकार अपनी कल्पना और रचनात्मकता को दृश्य रूप प्रदान करता है। दृश्य कला केवल सुंदर वस्तु बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और व्यक्तिगत विचारों को भी व्यक्त किया जाता है।

दृश्य कला के प्रमुख प्रकार

1. **चित्रकला (Painting)** – रंगों और ब्रश की सहायता से चित्र बनाना। जैसे जलरंग, तैलचित्र और ऐक्रेलिक चित्र।
2. **रेखाचित्र (Drawing)** – रेखाओं और आकृतियों के माध्यम से विचार या वस्तु को प्रस्तुत करना।
3. **मूर्तिकला (Sculpture)** – मिट्टी, पत्थर, लकड़ी, धातु आदि से त्रि-आयामी आकृतियाँ बनाना।

4. **प्रिंटमेकिंग (Printmaking)** – किसी डिज़ाइन या चित्र को विशेष तकनीक से कागज या अन्य सतह पर छापना।
5. **फोटोग्राफी (Photography)** – कैमरे के माध्यम से दृश्यों, व्यक्तियों और घटनाओं को कलात्मक रूप में प्रस्तुत करना।
6. **शिल्प कला (Craft Art)** – उपयोगी या सजावटी वस्तुओं को कलात्मक ढंग से बनाना, जैसे मिट्टी के बर्तन, बुनाई और लकड़ी का काम।
7. **डिजिटल कला (Digital Art)** – कंप्यूटर, टैबलेट और अन्य डिजिटल माध्यमों से बनाई गई कला।

दृश्य कला के प्रमुख तत्व

दृश्य कला को प्रभावशाली बनाने में कई तत्व महत्वपूर्ण होते हैं, जैसे:

- रेखा (Line)
- आकार एवं आकृति (Shape and Form)
- रंग (Colour)
- प्रकाश और छाया (Light and Shade)
- बनावट (Texture)
- स्थान (Space)
- संतुलन और सामंजस्य (Balance and Harmony)

दृश्य कला का महत्व

दृश्य कला मनुष्य के जीवन और समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने का माध्यम है। इसके द्वारा किसी देश की संस्कृति, परंपराओं और इतिहास को समझने में सहायता मिलती है। कला व्यक्ति की कल्पनाशक्ति, रचनात्मकता और सौंदर्य-बोध को विकसित करती है। इसके अतिरिक्त, दृश्य कला सामाजिक समस्याओं और महत्वपूर्ण संदेशों को लोगों तक पहुँचाने का प्रभावी माध्यम भी है।

निष्कर्ष

अतः, दृश्य कला मनुष्य की रचनात्मक सोच और भावनाओं की दृश्य अभिव्यक्ति है। यह केवल चित्र बनाने या मूर्ति बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें कलाकार के विचार, अनुभव,

संस्कृति और समाज की झलक दिखाई देती है। इसलिए दृश्य कला व्यक्ति और समाज दोनों के लिए अभिव्यक्ति, शिक्षा, संस्कृति और सौंदर्य का महत्वपूर्ण माध्यम है।

TOPIC ON FILM (VIDEOGRAPHY)

फिल्मों में दृश्य कला का महत्व

फिल्म एक ऐसी कला है जिसमें कहानी को केवल संवाद और अभिनय के माध्यम से ही नहीं, बल्कि दृश्य माध्यमों के द्वारा भी प्रस्तुत किया जाता है। फिल्मों में दृश्य कला (Visual Arts) का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। रंग, प्रकाश, कैमरा, सेट, वेशभूषा, मेकअप, लोकेशन, ग्राफिक्स और दृश्य संरचना के माध्यम से फिल्म के वातावरण, भावनाओं और कहानी को प्रभावशाली बनाया जाता है।

फिल्मों में दृश्य कला का महत्व

1. कहानी को प्रभावशाली बनाना:

दृश्य कला कहानी को बिना अधिक संवाद के समझाने में मदद करती है। किसी स्थान, समय या घटना को उसके दृश्य रूप से आसानी से समझाया जा सकता है।

2. भावनाओं को व्यक्त करना:

रंग, प्रकाश और कैमरे के फ्रेम के माध्यम से पात्रों की भावनाओं को प्रभावी ढंग से दिखाया जाता है। उदाहरण के लिए, अंधेरे और कम रोशनी का प्रयोग तनाव या डर का वातावरण बनाने के लिए किया जा सकता है।

3. फिल्म का वातावरण और माहौल बनाना:

सेट डिजाइन, लोकेशन, प्रकाश और रंग फिल्म के वातावरण को निर्धारित करते हैं। ऐतिहासिक फिल्म में पुराने महल, पोशाक और वस्तुएँ उस समय की दुनिया को वास्तविक बनाने में मदद करती हैं।

4. चरित्र निर्माण में सहायता:

किसी पात्र की वेशभूषा, हेयरस्टाइल, मेकअप और रंग-योजना उसके व्यक्तित्व और सामाजिक स्थिति को दर्शा सकती है।

5. समय और स्थान की पहचान:

दृश्य कला यह बताने में मदद करती है कि कहानी किस समय और स्थान पर आधारित है। उदाहरण के लिए, किसी ऐतिहासिक फिल्म में पुराने भवन, पारंपरिक कपड़े और उस समय की वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है।

6. फिल्म को आकर्षक बनाना:

सुंदर लोकेशन, रंगों का संतुलित प्रयोग, कलात्मक कैमरा फ्रेम और प्रभावशाली सेट फिल्म को देखने में अधिक आकर्षक बनाते हैं।

उदाहरण

- 'बाहुबली' जैसी फिल्मों में भव्य सेट, वेशभूषा, वास्तुकला और विशेष दृश्य प्रभावों ने फिल्म की काल्पनिक दुनिया को प्रभावशाली बनाया।
- 'पद्मावत' में सेट डिजाइन, वेशभूषा, आभूषण और रंगों का प्रयोग ऐतिहासिक वातावरण को प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण रहा।
- 'तुम्बाड' में अंधेरे रंगों, प्रकाश और सेट डिजाइन का प्रयोग डर और रहस्य का वातावरण बनाने के लिए किया गया।

निष्कर्ष

इस प्रकार, फिल्मों में दृश्य कला केवल फिल्म को सुंदर बनाने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह कहानी, भावनाओं, चरित्र, समय, स्थान और वातावरण को दर्शकों तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण साधन है। अच्छी दृश्य कला फिल्म के अनुभव को अधिक प्रभावशाली और यादगार बना सकती है।

UNIT-2

भारतीय कला परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ

1. प्राचीनता:

भारतीय कला की परंपरा बहुत पुरानी है। भीमबेटका की गुफा चित्रकला और सिंधु घाटी सभ्यता की मूर्तियाँ एवं मुहरें इसके प्राचीन उदाहरण हैं।

2. धार्मिक और आध्यात्मिक प्रभाव:

भारतीय कला पर बौद्ध, जैन और हिंदू धर्म का गहरा प्रभाव रहा है। मंदिरों, स्तूपों, मूर्तियों और चित्रों में धार्मिक तथा आध्यात्मिक विषय दिखाई देते हैं।

3. मूर्तिकला:

भारतीय मूर्तिकला में देवी-देवताओं, बुद्ध तथा विभिन्न मानवीय आकृतियों का सुंदर चित्रण मिलता है। सांची स्तूप और खजुराहो के मंदिरों की मूर्तिकला इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

4. चित्रकला:

भारतीय चित्रकला की कई परंपराएँ विकसित हुईं, जैसे अजंता की भित्ति चित्रकला, मुगल चित्रकला, राजस्थानी चित्रकला और पहाड़ी चित्रकला।

5. लोक कला:

भारत के विभिन्न क्षेत्रों में लोक कलाओं की समृद्ध परंपरा है। मधुबनी, वारली, गोंड और पटचित्र जैसी कलाएँ भारतीय लोक संस्कृति को दर्शाती हैं।

6. वास्तुकला:

भारतीय वास्तुकला में मंदिर, मस्जिद, स्तूप, किले और महल महत्वपूर्ण हैं। सांची स्तूप, कोणार्क सूर्य मंदिर और ताजमहल भारतीय वास्तुकला के प्रसिद्ध उदाहरण हैं।

7. प्रकृति और मानव जीवन का चित्रण:

भारतीय कला में प्रकृति, पशु-पक्षी, मानव जीवन, त्योहार और दैनिक गतिविधियों को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

भारतीय कला परंपरा का महत्व

भारतीय कला हमारी सांस्कृतिक पहचान और ऐतिहासिक विरासत को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इससे हमें अपने पूर्वजों के जीवन, विश्वासों, परंपराओं और सामाजिक परिस्थितियों की जानकारी मिलती है। साथ ही, कला रचनात्मकता, सौंदर्य-बोध और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देती है।

निष्कर्ष

अतः भारतीय कला परंपरा केवल चित्र, मूर्ति या भवन बनाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारत के इतिहास, संस्कृति, धर्म, दर्शन और जीवन-मूल्यों की अभिव्यक्ति है। प्राचीन से आधुनिक काल तक भारतीय कला ने अनेक रूप बदले हैं, फिर भी इसकी सांस्कृतिक और कलात्मक पहचान आज भी बनी हुई है।

भारतीय कला में जलरंग, तैलरंग और ऐक्रेलिक रंग का महत्व —

भारतीय कला में रंगों का विशेष महत्व है। रंगों के माध्यम से कलाकार अपनी भावनाओं, विचारों, प्रकृति, संस्कृति और जीवन के विभिन्न रूपों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। भारतीय चित्रकला में जलरंग, तैलरंग और ऐक्रेलिक रंग तीन महत्वपूर्ण माध्यम हैं। प्रत्येक माध्यम की अपनी विशेषता और उपयोग है।

1. जलरंग (Water Colour)

जलरंग को पानी के साथ मिलाकर कागज पर प्रयोग किया जाता है। यह हल्का, पारदर्शी और प्राकृतिक प्रभाव देने के लिए प्रसिद्ध है।

महत्व:

- प्रकृति और प्राकृतिक दृश्यों को सुंदर बनाने में उपयोगी।
- पारदर्शिता के कारण चित्र में हल्कापन और ताजगी आती है।
- भारतीय लोक एवं पारंपरिक चित्रकला में भी इसका प्रयोग किया जाता है।
- शुरुआती विद्यार्थियों के लिए अभ्यास का अच्छा माध्यम है।

उदाहरण:

पेड़-पौधे, नदी, पहाड़, आकाश और भारतीय ग्रामीण जीवन के चित्र जलरंग से प्रभावशाली बनाए जा सकते हैं।

2. तैलरंग (Oil Colour)

तैलरंग में रंगद्रव्य को तेल के साथ मिलाया जाता है। यह रंग गहरे, चमकीले और लंबे समय तक टिकने वाले होते हैं।

महत्व:

- चित्र में गहराई और त्रि-आयामी प्रभाव पैदा किया जा सकता है।
- प्रकाश और छाया को बहुत प्रभावशाली ढंग से दिखाया जा सकता है।
- पोर्ट्रेट, ऐतिहासिक विषय और बड़े कैनवास के चित्रों के लिए उपयोगी है।
- रंगों को मिलाकर अनेक प्रकार के शेड बनाए जा सकते हैं।

उदाहरण:

भारतीय कलाकारों ने तैलरंग के माध्यम से व्यक्ति-चित्र (Portrait), ऐतिहासिक दृश्य और सामाजिक जीवन को चित्रित किया है।

3. ऐक्रेलिक रंग (Acrylic Colour)

ऐक्रेलिक रंग आधुनिक चित्रकला का लोकप्रिय माध्यम है। यह पानी आधारित रंग है और अपेक्षाकृत जल्दी सूख जाता है।

महत्व:

- जल्दी सूखने के कारण कलाकार कम समय में काम पूरा कर सकता है।
- कागज, कैनवास, लकड़ी और कई अन्य सतहों पर प्रयोग किया जा सकता है।
- इसके रंग चमकीले और टिकाऊ होते हैं।
- आधुनिक तथा समकालीन भारतीय कला में इसका व्यापक प्रयोग होता है।
- इसमें पारदर्शी और अपारदर्शी दोनों प्रकार के प्रभाव बनाए जा सकते हैं।

जलरंग, तैलरंग और ऐक्रेलिक में अंतर

माध्यम	प्रमुख विशेषता	सामान्य उपयोग
जलरंग	पारदर्शी और हल्का	प्रकृति एवं दृश्य चित्र
तैलरंग	गहरा, चमकीला और धीमी गति से सूखने वाला पोर्ट्रेट एवं कैनवास चित्र	
ऐक्रेलिक	जल्दी सूखने वाला और बहुउपयोगी	आधुनिक एवं समकालीन चित्रकला

निष्कर्ष

इस प्रकार जलरंग, तैलरंग और ऐक्रेलिक भारतीय कला में महत्वपूर्ण चित्रकला माध्यम हैं। जलरंग प्राकृतिक और पारदर्शी प्रभाव देता है, तैलरंग गहराई और यथार्थता प्रदान करता है तथा ऐक्रेलिक आधुनिक और बहुउपयोगी माध्यम है। इन तीनों माध्यमों ने कलाकारों को अपनी कल्पना, भावनाओं और रचनात्मकता को प्रभावशाली रूप से व्यक्त करने के अनेक अवसर प्रदान किए

1. 1. मधुबनी कला

मधुबनी कला बिहार के मिथिला क्षेत्र की प्रसिद्ध लोक चित्रकला है। इसमें प्राकृतिक रंगों और सरल रेखाओं का प्रयोग किया जाता है। चित्रों में देवी-देवता, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, विवाह और धार्मिक अवसरों को दर्शाया जाता है।

विशेषताएँ:

- चमकीले और आकर्षक रंगों का प्रयोग।
- चित्रों में खाली स्थान बहुत कम छोड़ा जाता है।
- ज्यामितीय आकृतियों और सजावटी रेखाओं का प्रयोग।
- प्रकृति और धार्मिक विषयों को महत्व।

उदाहरण: विवाह के अवसर पर बनाए जाने वाले **कोहबर चित्र** मधुबनी कला का प्रसिद्ध उदाहरण हैं।

2. भीमबेटका की चित्रकला

भीमबेटका मध्य प्रदेश में स्थित प्रागैतिहासिक शैलाश्रयों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की गुफाओं में प्राचीन मानव द्वारा बनाए गए शैलचित्र मिलते हैं। इन चित्रों से उस समय के मानव जीवन और उनकी गतिविधियों की जानकारी मिलती है।

विशेषताएँ:

- शिकार, नृत्य और दैनिक जीवन के दृश्य।
- मनुष्य और पशु-पक्षियों की आकृतियाँ।
- प्राकृतिक रंगों का प्रयोग।
- सरल रेखाओं और आकृतियों द्वारा अभिव्यक्ति।

उदाहरण: शिकार करते हुए मनुष्यों और हिरण, बाइसन तथा अन्य पशुओं के चित्र इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

3. वारली कला

वारली कला महाराष्ट्र की आदिवासी कला परंपरा है। यह मुख्य रूप से वारली समुदाय से जुड़ी हुई है। इसमें सरल वृत्त, त्रिकोण और रेखाओं की सहायता से मानव और प्रकृति का चित्रण किया जाता है।

विशेषताएँ:

- सामान्यतः मिट्टी के रंग की पृष्ठभूमि पर सफेद रंग का प्रयोग।
- ज्यामितीय आकृतियों का विशेष महत्व।
- खेती, नृत्य, विवाह और दैनिक जीवन के दृश्य।
- प्रकृति और सामुदायिक जीवन का चित्रण।

उदाहरण: तारपा नृत्य का सामूहिक दृश्य वारली चित्रों में बहुत प्रसिद्ध है।

4. थेवा कला

थेवा कला राजस्थान के प्रतापगढ़ क्षेत्र की प्रसिद्ध पारंपरिक कला है। इसमें सोने की पतली चादर को रंगीन काँच पर विशेष तकनीक से सजाया जाता है। यह कला आभूषणों और सजावटी वस्तुओं में दिखाई देती है।

विशेषताएँ:

- सोने और रंगीन काँच का सुंदर संयोजन।
- बहुत बारीक और जटिल डिजाइन।
- प्रकृति, फूल-पत्तियों, पशु-पक्षियों और ऐतिहासिक दृश्यों का चित्रण।
- पारंपरिक हस्तकला और आभूषण निर्माण से जुड़ी कला।

उदाहरण: थेवा तकनीक से बनाए गए हार, पेंडेंट, कंगन और सजावटी आभूषण इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

निष्कर्ष

इस प्रकार मधुबनी, भीमबेटका, वारली और थेवा भारतीय कला की अलग-अलग परंपराओं को दर्शाते हैं। मधुबनी में मिथिला की संस्कृति, भीमबेटका में प्रागैतिहासिक मानव जीवन, वारली में आदिवासी समुदाय और प्रकृति तथा थेवा में पारंपरिक हस्तकौशल की झलक मिलती है। ये कलाएँ भारत की विविध सांस्कृतिक और कलात्मक विरासत को समझने में महत्वपूर्ण हैं।

UNIT-3

मुगल चित्रकला

मुगल चित्रकला भारतीय चित्रकला के इतिहास की एक महत्वपूर्ण शैली है। इसका विकास मुगल सम्राटों के संरक्षण में 16वीं से 18वीं शताब्दी के बीच हुआ। इस शैली में फारसी, भारतीय और मध्य

एशियाई कला परंपराओं का प्रभाव दिखाई देता है। मुगल चित्रकला में दरबार, युद्ध, शिकार, प्रकृति, पशु-पक्षी तथा शाही जीवन का सुंदर चित्रण किया गया।

मुगल चित्रकला की प्रमुख विशेषताएँ

1. फारसी और भारतीय प्रभाव:

मुगल चित्रकला में फारसी चित्रकला की बारीक रेखाएँ और सजावटी शैली तथा भारतीय कला की विषय-वस्तु और प्राकृतिकता का सुंदर मेल दिखाई देता है।

2. सूक्ष्म एवं बारीक चित्रण:

मुगल कलाकार चेहरे, कपड़े, आभूषण, पेड़-पौधे और पशु-पक्षियों को बहुत बारीकी से चित्रित करते थे।

3. दरबारी जीवन का चित्रण:

सम्राटों के दरबार, राजकीय समारोह, मंत्रियों और दरबारियों के चित्र इस शैली की महत्वपूर्ण विशेषता हैं।

4. प्राकृतिक चित्रण:

पशु-पक्षियों, फूलों और पेड़-पौधों को वास्तविक रूप के करीब चित्रित किया गया। **उस्ताद मंसूर** अपने प्रकृति और पशु-पक्षी चित्रों के लिए प्रसिद्ध थे।

5. रंगों का प्रयोग:

मुगल चित्रों में लाल, हरा, नीला, सुनहरा और अन्य चमकीले रंगों का संतुलित प्रयोग किया जाता था।

6. व्यक्ति-चित्रण:

मुगल चित्रकला में बादशाहों, राजकुमारों और महत्वपूर्ण व्यक्तियों के **व्यक्ति-चित्र (Portraits)** बनाए गए। चेहरे की विशेषताओं को पहचान योग्य बनाने पर विशेष ध्यान दिया जाता था।

प्रमुख मुगल शासक और उनका योगदान

- **अकबर:** मुगल चित्रकला के विकास में विशेष योगदान दिया। उनके समय में बड़े पैमाने पर चित्रित पांडुलिपियाँ तैयार की गईं।

- **जहाँगीर:** प्रकृति, पशु-पक्षी और व्यक्ति-चित्रण को विशेष प्रोत्साहन दिया। इस काल में चित्रों में अधिक प्राकृतिकता दिखाई देती है।
- **शाहजहाँ:** दरबारी वैभव, राजसी जीवन और सजावटी चित्रों को बढ़ावा मिला।
- **औरंगज़ेब:** उनके समय में शाही संरक्षण में चित्रकला का महत्व पहले की तुलना में कम हुआ और कई कलाकार अन्य क्षेत्रीय दरबारों की ओर चले गए।

मुगल चित्रकला के उदाहरण

1. हमज़ानामा:

अकबर के समय तैयार की गई प्रसिद्ध चित्रित पांडुलिपि। इसमें हमज़ा की कथाओं से जुड़े अनेक दृश्य हैं।

2. अकबरनामा:

अकबर के शासन और जीवन से संबंधित घटनाओं को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया।

3. जहाँगीर का चित्र:

जहाँगीर के समय व्यक्ति-चित्रण और प्राकृतिक विषयों में विशेष विकास हुआ।

4. उस्ताद मंसूर के पशु-पक्षी चित्र:

इनमें पशु-पक्षियों का अत्यंत सूक्ष्म और प्राकृतिक चित्रण देखने को मिलता है।

निष्कर्ष

अतः मुगल चित्रकला शैली भारतीय कला इतिहास की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसमें फारसी और भारतीय कला का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। सूक्ष्म रेखांकन, प्राकृतिक चित्रण, चमकीले रंग, व्यक्ति-चित्र और दरबारी जीवन का चित्रण इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। मुगल चित्रकला ने आगे चलकर राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला जैसी क्षेत्रीय शैलियों के विकास को भी प्रभावित किया।

UNIT-4

एम. एफ. हुसैन और राजा रवि वर्मा

1. एम. एफ. हुसैन

एम. एफ. हुसैन (1917–2011) भारत के प्रसिद्ध आधुनिक चित्रकार थे। उन्हें भारतीय आधुनिक कला के प्रमुख कलाकारों में गिना जाता है। उनकी चित्रकला में भारतीय संस्कृति, लोकजीवन, धार्मिक विषयों और सामाजिक घटनाओं की झलक दिखाई देती है।

उनकी शैली में **चटकीले रंग, सरल आकृतियाँ और तेज रेखाएँ** प्रमुख थीं। उन्होंने घोड़े, देवी-देवताओं, महाकाव्यों और आम लोगों को अपने चित्रों का विषय बनाया। उनकी कला पारंपरिक भारतीय विषयों को आधुनिक शैली में प्रस्तुत करती थी।

2. राजा रवि वर्मा

राजा रवि वर्मा (1848–1906) भारत के प्रसिद्ध चित्रकार थे। उन्होंने भारतीय पौराणिक कथाओं और देवी-देवताओं को **यथार्थवादी और यूरोपीय चित्रकला शैली** में प्रस्तुत किया।

उनके प्रसिद्ध चित्रों में **शकुंतला, दमयंती और सरस्वती** जैसे विषय शामिल हैं। उन्होंने लिथोग्राफिक प्रिंटों के माध्यम से अपने चित्रों को आम लोगों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी कला में भारतीय विषयों और पश्चिमी तकनीक का सुंदर मेल दिखाई देता है।

निष्कर्ष

राजा रवि वर्मा ने भारतीय पौराणिक और सांस्कृतिक विषयों को यथार्थवादी शैली में लोकप्रिय बनाया, जबकि एम. एफ. हुसैन ने भारतीय विषयों को आधुनिक और प्रयोगात्मक शैली में प्रस्तुत किया। दोनों कलाकारों का भारतीय चित्रकला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा।